✺ 22 अप्रैल 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] बाबा कहते– बच्चे, देही-अभिमानी बन तुम मेरे से नजर लगाओ अर्थात् मुझे याद करो, और संग तोड़ एक मेरे संग जोड़ो तो बेहाल अर्थात् कंगाल से निहाल अर्थात् साहूकार बन जायेंगे।

2] गायन है नज़र से निहाल कींदा स्वामी सत्गुरु। उनका अर्थ चाहिए। नज़र से निहाल किसको? जरूर सारी दुनिया के लिए कहेंगे क्योंकि सर्व का सद्गति दाता है। सर्व को इस पतित दुनिया से ले जाने वाला है। अब नज़र किसकी? क्या यह आखें? नहीं, तीसरी आंख मिलती है ज्ञान की। जिससे आत्मा जानती है यह हम सभी आत्माओं का बाप है।

3] 84 जन्मों का पार्ट बजाते आत्मा पतित बन पड़ी है। अब आत्मा में कुछ भी दम नहीं रहा है। अब आत्मा निहाल नहीं, बेहाल अर्थात् कंगाल है। फिर निहाल कैसे बने?

4] वह है सुप्रीम आत्मा। सुप्रीम माना वह सदैव पवित्र और निर्विकारी है। तुम आत्मायें भी निर्विकारी थी, दुनिया भी निर्विकारी थी। उनको कहा ही जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी, नई दुनिया फिर जरूर पुरानी होती है। कला कम होती जाती है। दो कला कम चन्द्रवंशी राज्य था फिर दुनिया पुरानी बनती जाती है।

5] आपकी विशेषतायें वा गुण प्रभु प्रसाद हैं, उन्हें मेरा मानना ही देह-अभिमान है।

✺ योग-

1] अब तुम्हारी आत्मा तमोप्रधान बन गई है। बाप को याद करेंगे तो निहाल हो जायेंगे। बाप सम्मुख कहते हैं मुझे याद करो, मैं कौन? परमपिता परमात्मा। बाप कहते हैं– बच्चे, देही-अभिमानी बनो; देह-अभिमानी नहीं बनो। आत्म-अभिमानी बन तुम मेरे में नज़र लगाओ तो तुम निहाल हो जायेंगे। बाप को याद करते रहो, इसमें कोई तकलीफ नहीं।

2] मीठे-मीठे बच्चे, तुम भी बाप से नज़र लगाओ अथवा हे आत्मा, अपने बाप को याद करो तो निहाल हो जायेंगे। बाबा कहते हैं– जो मुझे याद करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ। जो मेरे लिए सर्विस करते हैं, मैं भी उनको याद करता हूँ, तो उनको बल मिलता है। तुम यहाँ सब बैठे हो जो निहाल हो जायेंगे, वही राजा बनेंगे।

✺ धारणा-

1] वह पढ़ाईयां तो जन्म-जन्मान्तर पढ़ते आये। इसमें तो बाप साफ बतलाते हैं कि आत्मा जब पवित्र होगी तब धारणा होगी।

2] शमा पर जीते जी मरने वाला परवाना बनना है, सिर्फ फेरी लगाने वाला नहीं ईश्वरीय पढ़ाई को धारण करने के लिए बुद्धि को सम्पूर्ण पावन बनाना है।

3] सब संग तोड़ एक बाप के संग में रहना है। एक की याद से स्वयं को निहाल करना है।

✺ सेवा-

1] – – – – – – – –